<u>सम्पूर्णता वर्ष</u>

मग्न हो जाएँ प्रभु प्यार में – 2

11.05.2014

1. **<u>स्वमान</u> –** मैं बाबा के नयनों का नूर हूँ।

- (आप स्वयं को इस प्रकार कॉमेन्ट्री दें) माँ ! मैं सारे कल्प खेलते-खेलते (जन्म लेते-लेते) बहुत थक गया था....सब कुछ लुटाकर, सब कुछ खोकर गंदा हो गया था....अपना स्वमान, अपना गौरव, अपना श्रेष्ठ कुल सबकुछ नष्ट कर बैठा था....माँ, अब आपकी शीतल गोद में आकर मुझे सच्चा सुकुन-सच्चा चैन मिला है....आपकी गोद में आकर मुझे मेरा गौरव, मेरा आत्म-सम्मान, मेरे श्रेष्ठ संस्कार वापस प्राप्त हो गये....अब मैं आपकी गोद से कभी भूलकर भी नहीं उतरूँगा....।

2. **<u>योगाभ्यास</u> –**

अ. मधुबन में बाबा के कमरे वा कुटिया में बापदादा की गोद में सिर रख उनके आशीर्वाद का हाथ अपने सिर पर अनुभव करें....।

ब. वतन में अपने फरिश्ते स्वरुप को इमर्ज करें और देखें कि कैसे माँ भिन्न-भिन्न गुणों व शक्तियों से मेरा श्रृंगार कर रही हैं....।

स. ज्ञान सूर्य बड़ी माँ और ज्ञान चंद्रमा छोटी माँ के साथ मैं ज्ञान सितारा सारे संसार को प्रकाशित कर रहा हूँ....पावन कर रहा हूँ....।

3. **<u>धारणा</u> – निर्भय और निश्िंचत**

- स्वयं भगवान जिसकी माँ हो, उसे कैसा भय और कैसी चिंता....!! अपनी माँ के आँचल तले मैं संपूर्ण निर्भय और निश्िंचत हूँ....।

4. **<u>चिंतन</u> –**

- आदर्श बेटा किसे कहेंगे ? 10 विशेषताएँ लिखें और स्वयं में चेक करें।
- भगवान को माँ के रुप में कहाँ-कहाँ यूज कर सकते हैं, लिखें ?
- माँ के रुप में प्राप्तियाँ या अपना अनुभव लिखें ?

5. **<u>तपस्वियों प्रति</u> –** प्रिय तपस्वियों ! माँ बच्चे की प्रथम गुरु होती है। माँ ही बच्चे के श्रेष्ठ संस्कारों व उसके चरित्र का निर्माण करने वाली होती है। हम भाग्यशाली हैं जो हमे पवित्रता की सागर, सदा पावन माँ मिली एवं उनके द्वारा हमारा अलौकिक मरजीवा जन्म हुआ। संसार में ऐसी माँ किसी की नहीं होगी जो (माँ, पिता, टीचर, सद्गुरु हो) जन्म देने, पालना करने, पढ़ाने वाली और सद्गति करके साथ ले जाने वाली हो।